International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 17-20

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 17-20
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-01-2022
Accepted: 17-02-2022

डॉ. आनन्द कुमार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, कालकाजी, नई दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. आनन्द कुमार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, कालकाजी, नई दिल्ली,
भारत

ऐतिहासिक संदर्भों के आलोक में 'प्रतापविजयम्'

डॉ. आनन्द कुमार

सारांश
मुगलसम्राट् अकबर मेवाड़ प्रदेश को अपने अधीन करने के लिए कृतसंकल्प था तो प्रणवीर महाराणा प्रताप उसकी रक्षा करने के लिए। ऐतिहासिक ग्रन्थों में एवं मूलशंकर याज्ञिक विरचित 'प्रतापविजयम्' नाटक में यह बात एकसमान वर्णित है। बिना युद्ध मेवाड़ के भाग्य का निर्णय नहीं हो सकता, यह बात दोनों पक्षों को ज्ञात थी। अतः राणा प्रताप युद्ध हेतु सेना को सुसज्जित करते हैं। उनका यह मानना है कि मेवाड़ के पर्वतीय प्रदेश सदैव रक्षक रहे हैं। वहां छिपकर यवनों के विशाल सैन्य बल को नष्ट किया जा सकता है। अतः सेनापति को सेना सहित पर्वतीय प्रदेश में रहने की आज्ञा देते हैं। इधर अकबर ने भी मानसिंह के नेतृत्व में हल्दीघाटी के मैदान में सैनिक दल को भेज दिया। ऐतिहासिक ग्रन्थों एवं प्रतापविजय नाटक दोनों में समानतः यह वर्णन प्राप्त होता है कि महाराणा प्रताप चेतक पर सवार होकर मानसिंह के हाथी के पास जा पहुंचे और चेतक ने अपने आगे के दोनों पैर हाथी के ऊपर रख दिए। इसके पश्चात् महाराणा ने भाले से मानसिंह के ऊपर प्रहार किया, दुर्भाग्य से मानसिंह सुरक्षित रहा। वस्तुत: ऐतिहासिक संदर्भों के आलोक में 'प्रतापविजयम्' की समीक्षा करने का प्रयास प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है। इतिहास–ग्रन्थों एवं इस नाटक में एक समान यह वर्णन प्राप्त होता है कि मानसिंह की मृत्यु का असत्य समाचार सुनकर मुगलसेना में भगदड़ मच गई परन्तु उन्होंने सेना में फिर से उत्साह का संचार किया और अभूतपूर्व युद्ध छिड़ गया। महाराणा प्रताप ने नानविध कष्टों का वीरतापूर्वक सामना करते हुए स्वतंत्रताप्राप्ति रूपी व्रत को पूर्ण किया। महाकवि याज्ञिक ने महाराणा प्रताप के उदात्त चरित्र के प्रतिपादन के लिए ही कुछ स्थानों पर काल्पनिक परिवर्तन किया है जो धीरोदात्त नायक और वीररस की अभिव्यंजना के लिए सर्वथा उचित और सार्थक है।

कूटशब्द: आईने अकबरी, हल्दीघाटी, चेतक, मेवाड़, मानसिंह, गोगूंदा, राणा पूंजा, पृथ्वीराज राठौड़।

प्रस्तावना:
महाकवि मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक प्रणीत 'प्रतापविजयम्' आधुनिक संस्कृत साहित्य की अद्वितीय नाट्यकृति है। इसकी रचना 1926 ई॰ में हुई थी [1] और इसका प्रकाशन स्वयं रचनाकार द्वारा 1931ई॰ में बड़ौदा प्रिंटिंग प्रेस से किया गया। [2] नौ अंकों में उपनिबद्ध इसका कथानक ऐतिहासिक है। [3] महाकवि याज्ञिक ने इस नाटक की कथावस्तु का आधार निम्नांकित ग्रन्थों को बनाया है– [4]

1. वीरशिरोमणिमहाराजप्रतापसिंह (डॉ॰ गौरीशंकर हीरानन्द ओझाकृत)
2. श्रीमहाराणाप्रतापसिंहचरितम् (श्रीपादशास्त्रीकृत)

3. आईने अकबरी (अबुल फ़ज़ल)
4. जहांगीर के संस्मरण

'प्रतापविजयम्' मेवाड़ नरेश महाराणा प्रताप की शौर्यगाथा है जो राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण व स्वतंत्रताप्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील हैं। यह वीररस प्रधान नाट्यकृति है। इसका नायक धीरोदात्त है [5], क्योंकि नाटककार स्वयं कहते हैं कि महाराणा प्रताप का चरित्र धीरोदात्त नायक के सभी गुणों से परिपूर्ण है। [6] मेवाड़ नरेश महाराणा प्रताप एवं मुगलसम्राट अकबर के मध्य हुए इतिहासप्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध की कथा इस नाटक की कथावस्तु है जिसके माध्यम से नाटककार मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक (1886–1965 ई°) ने तत्कालीन अंग्रेजी सत्ता के प्रति विद्रोह की भावना को जागृत किया है तथा भारतीयों को संघर्ष करने की प्रेरणा दी है। इस नाटक की रचना उस समय हुई जब स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था और राष्ट्र के महान सपूत इस आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। ठीक ऐसे समय महाकवि याज्ञिक जैसे क्रान्तदर्शी रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से उन राष्ट्रनायकों का उत्साहवर्धन कर रहे थे।

महाकवि मूलशंकर याज्ञिक ने अपने इस नाटक में नाट्यशास्त्र के नियमों का पूर्णतः पालन किया है। [7] नाटककार महाराणा प्रताप के उदात्त चरित्र की रक्षा के लिए और वीररस की व्यंजना के लिए आवश्यकतानुसार ऐतिहासिक कथावस्तु से अपने नाटक की कथावस्तु में किंचित् परिवर्तन करते हैं जो नाटक की सर्वांगपूर्ण कथावस्तु के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। वस्तुतः महाराणा प्रताप के विषय में हमारे पास जो भी जानकारी है उसका आधार ऐतिहासिक ग्रन्थ ही हैं और केवल इन ग्रन्थों के आधार पर भावी पीढ़ी को इतिहासपुरूष राणा प्रताप की वीरगाथा से परिचित नहीं कराया जा सकता। नाट्य में दर्शक को अपनी कल्पना दौड़ाने की आवश्यकता नहीं होती। अन्य समस्त इन्द्रियों द्वारा ग्रहण की गई वस्तुओं की अपेक्षा आंखों द्वारा देखी गई वस्तु अधिक रोचक तथा हृदयावर्जक होती है। यही कारण है कि जनसाधारण श्रव्यकाव्य की अपेक्षा नाट्य से ही अधिक प्रभावित होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महाकवि याज्ञिक ने ऐतिहासिक कथावस्तु को सरस एवं नाट्योपयोगी बनाने के लिए अपनी नवनवोन्मेषिणी प्रतिभा से इसमें अनेक परिवर्तन किए हैं, जिनसे पात्रों के चरित्र में उदात्तता एवं कथा में स्वाभाविकता का संचार हुआ है।

महाकवि याज्ञिककृत इस नाटक में राणा प्रताप के वीरचरित को नाटकीय रूप प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम नान्दी–पाठ [8] के पश्चात् मेवाड़ अधिपति महाराणा प्रताप एवं मुगल सम्राट अकबर के सेनापति मानसिंह के मध्य संवाद से कथा का प्रारंभ होता है। अकबर ने मेवाड़ के आस–पास के राजाओं को अपने अधीन कर लिया है एवं उनमें से अनेक के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित कर लिया है। ऐसे में वह मेवाड़ नरेश महाराणा प्रताप के पास मानसिंह को दूत बनाकर यह संदेश भेजता है कि वह (महाराणा प्रताप) मुगल सेना में सर्वोच्च पद प्राप्त कर अकबर की अधीनता स्वीकार कर ले। [9] लेकिन महाराणा प्रताप ने उसकी बातों को अस्वीकार कर दिया और कहा–"सूर्यकुलोत्पन्न क्षत्रिय के लिए यह असंभव है। तेजस्वी, पराक्रमी, शौर्यादि गुणों से संपन्न सूर्यवंशी कष्ट होने पर भी पराधीनता स्वीकार नहीं करते।" [10] इस बीच युवराज अमरसिंह, मानसिंह के आतिथ्य–सत्कार हेतु नियुक्त किये जाते हैं। [11] अमरसिंह, मानसिंह को मेवाड़–भूमि की रमणीयता का दर्शन कराते हैं। इधर आतिथ्य–सत्कार करते हुए भी राणा प्रताप, मानसिंह के साथ भोजन करना स्वीकार नहीं करते बल्कि भोजन के समय तीव्र उदरपीडा़ का स्वांग करते हैं। [12] यह देखकर क्रोधित मानसिंह वहां से चला जाता है। [13] उपर्युक्त यह वर्णन पूर्णतः ऐतिहासिक है क्योंकि ऐतिहासिक ग्रन्थों एवं प्रतापविजय नाटक दोनों में यह तथ्य एक समान प्रतिपादित है। अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों से यह भी ज्ञात होता है कि मानसिंह के असफल होने पर अकबर ने भगवानदास और टोडरमल को भी महाराणा प्रताप को समझाने व अधीनता स्वीकार के लिए भेजा था लेकिन नाटककार ने इस घटना का उल्लेख नहीं किया है। [14]

मुगलसम्राट अकबर मेवाड़ को अपने अधीन करने के लिए कृतसंकल्प था तो प्रणवीर महाराणा प्रताप उसकी रक्षा करने के लिए। ऐतिहासिक ग्रन्थों में एवं प्रतापविजय नाटक में यह बात एकसमान वर्णित है। बिना युद्ध मेवाड़ के भाग्य का निर्णय नहीं हो सकता, यह बात दोनों पक्षों को ज्ञात थी। अतः राणा प्रताप युद्ध हेतु सेना को सुसज्जित करते हैं। उनका यह मानना है कि मेवाड़ के पर्वतीय प्रदेश सदैव रक्षक रहे हैं। वहां छिपकर मुगलों के विशाल सैन्य बल को नष्ट किया जा सकता है। अतः सेनापति को सेना सहित पर्वतीय प्रदेश में रहने की आज्ञा देते हैं। [15] इधर अकबर ने भी मानसिंह के नेतृत्व में हल्दीघाटी के मैदान में सैनिक दल को भेज दिया। ऐतिहासिक ग्रन्थों एवं प्रतापविजय नाटक दोनों में समानतः यह वर्णन प्राप्त होता है कि महाराणा प्रताप चेतक पर सवार होकर मानसिंह के हाथी के पास जा पहुंचे और चेतक ने अपने आगे के दोनों पैर हाथी के ऊपर रख दिए। इसके पश्चात् महाराणा ने भाले से मानसिंह के ऊपर प्रहार किया, दुर्भाग्य से मानसिंह सुरक्षित रहा। [16] इतिहास–ग्रन्थों एवं इस नाटक में एक समान यह वर्णन प्राप्त होता है कि मानसिंह की मृत्यु का समाचार सुनकर मुगलसेना में भगदड़ मच गई परन्तु

उन्होंने सेना में फिर से उत्साह का संचार किया और अभूतपूर्व युद्ध छिड़ गया। [17]

हल्दीघाटी के युद्ध में चेतक का प्रसंग: यह एक ऐसा प्रसंग है जहां ऐतिहासिक संदर्भ से इस नाटक का वर्णन भिन्न रूप में प्राप्त होता है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि जब चेतक ने मानसिंह के हाथी के सिर पर अपने दोनों पैर रखा हुआ था तो हाथी की सूंढ़ में बंधी तलवार से उसका एक पैर कट गया। ठीक उसी समय मुगल सैनिकों ने महाराणा प्रताप को घेर लिया किन्तु सैनिकों ने राणा प्रताप को उस संकट से बाहर निकालकर उसकी रक्षा की। युद्ध में घायल हो जाने पर भी खंजित पैर वाला चेतक महाराणा को रणभूमि से सुरक्षित बाहर निकाल लाने में सफल रहा और एक बरसाती नाला पार करने के पश्चात् वीरगति को प्राप्त हुआ। राणा प्रताप ने वहीं उसका अंतिम संस्कार कर दिया। [18]

महाकवि याज्ञिक विरचित प्रतापविजय नाटक में चेतक के वर्णनप्रसंग में नाटकीय मोड़ देखने को मिलता है। नाटककार के अनुसार चेतक का पिछला पैर तब घायल हो जाता है जब हाथी पर लटके तीक्ष्ण तलवार से उसका पैर टकराता है और रक्तरंजित, खंजित पैर वाला वह वीर अश्व तीव्रगति से अपने स्वामी को लेकर युद्धस्थल से बाहर आ जाता है। चेतक का उपचार होता है लेकिन वह वीरगति को प्राप्त हो जाता है। चेतक अपने स्वामी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाकर ही वीरगति को प्राप्त होता है। [19] उसने अपने स्वामी का साथ बीच मार्ग में नहीं छोड़ा। नाटककार द्वारा ऐतिहासिक कथावस्तु में इस प्रकार का परिवर्तन अश्व चेतक के अद्वितीय–अलौकिक पराक्रम–वीरता और स्वामिभक्ति को पाठकों व दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत करना था जिसका वह पात्र भी था।

इतिहास ग्रन्थों एवं 'प्रतापविजय' दोनों में एकसमानत: वर्णन प्राप्त होता है कि महाराणा युद्धस्थल से शिविर को चले आए थे जबकि मुगल और मेवाड़ सैनिकों में घमासान युद्ध छिड़ा हुआ था। मेवाड़ के सैनिक अत्यन्त वीरतापूर्वक लड़ रहे थे, जिसमें झालामानसिंह जैसे योद्धा वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। [20] ऐतिहासिक ग्रन्थों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि मानसिंह की असफलता और जुलाई 1576 ई॰ में महाराणा प्रताप द्वारा गोगूंदा पुनः वापस ले लेने पर अकबर स्वयं युद्ध के लिए प्रयाण करता है और राणा प्रताप भी इधर–उधर छिपकर मुगलों के आक्रमण को असफल करते रहे। इस बीच अकबर भी सीमान्त प्रदेश में हुए असंतोष को दबाने में व्यस्त हो गया और तबतक महाराणा प्रताप को भी अपना राज्य सुदृढ़ करने का अवसर मिल गया। [21] जबकि 'प्रतापविजय' में वर्णित है कि अकबर चतुरंगिणी सेना लेकर युद्ध हेतु उद्यत होता है तभी उसे गांधार में बड़े विद्रोह की सूचना मिलती है और वह गांधार की ओर प्रयाण का कर जाता है। [22]

एक अन्य प्रसंग खाद्यान्न उत्पादन को लेकर है। इतिहास ग्रन्थों से प्राप्त साक्ष्य के अनुसार एवं 'प्रतापविजय' दोनों में एक जैसा वर्णन मिलता है, जिसमें महाराणा प्रताप ने आदेश दिया था कि मेवाड़ के मैदानी क्षेत्रों में किसी भी प्रकार के खाद्यान्न का उत्पादन न किया जाए। अन्न उत्पादन नहीं होने से आक्रमणकारी सेना को खाद्यान्न की आपूर्ति नहीं हो सकेगी। यदि किसी ने आदेश का पालन नहीं किया तो मृत्युदण्ड का भागी होगा। [23]

राणा पूंजा भील का प्रसंग: 'राणा पूंजा मेवाड़' एक भील योद्धा था जिसने महाराणा प्रताप के निवेदन पर हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर का साथ नहीं दिया बल्कि राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया। इस युद्ध में राणा पूंजा भील ने अदम्य साहस से राणा प्रताप का साथ दिया था। [24] जबकि मूलशंकर याज्ञिक ने 'प्रतापविजय' में किंचित् परिवर्तन करते हुए वर्णन किया है कि पूंजा भील स्वयं महाराणा प्रताप के पास आया और अपने साथियों के साथ प्रताप–सेना में सम्मिलित होने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। [25] यहां भी इतिहास ग्रन्थों से भिन्न महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व का वर्णन करने का एकमात्र उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि नाटककार महाराणा प्रताप के अद्वितीय चरित्र को प्रभावशाली रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं जो बिना किसी से सहायता–याचना के भी राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध है।

पृथ्वीराज राठौड़ का प्रसंग: मेवाड़ की स्वतंत्रता तथा राजपूतों की मर्यादा की रक्षा के लिए सतत संघर्ष करने वाले महाराणा प्रताप के अनन्य समर्थक व प्रशंसक के रूप में पृथ्वीराज राठौड़ (बीकानेरनरेश राजसिंह के) का नाम हमारे समक्ष आता है। वैसे तो ये अकबर के दरबारी कवि थे लेकिन वीररस के अच्छे कवि के रूप में भी इनकी ख्याति है। महाराणा प्रताप के नाम से ही इस कविहृदय के मन में अगाध श्रद्धा थी। [26] इतिहास ग्रन्थों में एवं 'प्रतापविजय' नाटक में एकसमान यह प्रतिपादित है कि जब अकबर गुप्तचर से प्राप्त सूचना के आधार पर पृथ्वीराज से यह कहता है कि स्वतंत्रता–प्रेमी तुम्हारा अभिन्न मित्र महाराणा हमें 'सम्राट्' संबोधित करता हुआ शरण में आना चाहता है, तब प्रत्युत्तर में पृथ्वीराज कहता है कि यह बात बिल्कुल मिथ्या है। विषम परिस्थितियों में भी अजेय वह महाराणा आपको 'सम्राट्' संबोधन नहीं दे सकते, भले ही गंगा की धारा उल्टी बहे और सूर्योदय पूर्व के स्थान पर पश्चिम दिशा से हो। [27] सही बात का पता लगाने के लिए अकबर पृथ्वीराज को आज्ञा देता है।

पृथ्वीराज भी उपर्युक्त बातों के आलोक में महाराणा प्रताप को एक पत्र लिखता है जो वीररस से ओतप्रोत और अत्यन्त उत्साहवर्धक कविता से परिपूर्ण था। इस पत्र में लिखा था कि हे राणा प्रताप ! शत्रु की सभा में मैं अपनी मूंछ पर हाथ फेरूं या अपनी देह को तलवार से काट डालूं– इन दो में से एक बात अविलम्ब सूचित करें। [28] महाराणा प्रताप ने प्रत्युत्तर में कहा "सूर्यवंशोत्पन्न मेरा मनोभाव तुमने स्पष्ट समझा है क्योंकि फूलों के रसों का गुण तो भ्रमर ही जानता है, हाथी नहीं।" [29] उपर्युक्त विवरण इतिहास और नाटक दोनों में प्राप्त होता है लेकिन नाटककार याज्ञिक इस नाटक में यह बताना उचित नहीं समझते जैसा कि ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रतिपादित है कि वन प्रदेश में एक दिन घास की रोटी को जंगली बिल्ली द्वारा पुत्री के हाथ से छीन लेने पर या रोटी के लिए उसे बिलखते देखकर महाराणा अधीर हो जाते हैं और अकबर की अधीनता स्वीकार करने हेतु मन बना लेते हैं। पुनः पृथ्वीराज द्वारा सूर्यवंश के शौर्य का बोध कराने पर अकबर के विरुद्ध युद्ध के लिए प्रयाण कर जाते है और अंततः महाराणा प्रताप विजयी होते हैं। [30]

इस प्रकार महाराणा प्रताप ने नानविध कष्टों का वीरतापूर्वक सामना करते हुए स्वतंत्रताप्राप्ति रूपी व्रत को पूर्ण किया। 'प्रतापविजयम्' नाटक में महाकवि याज्ञिक द्वारा किए गए किंचित् परिवर्तन और परिवर्धन पर गंभीरतापूर्वक चिंतन करने पर यह स्पष्टतया कहा जा सकता है कि महाकवि ने महाराणा प्रताप के उदात्त चरित्र के प्रतिपादन के लिए ही कुछ स्थानों पर काल्पनिक परिवर्तन किया है जो धीरोदात्त नायक और वीररस की अभिव्यंजना के लिए सर्वथा उचित और सार्थक है। निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि 'प्रतापविजयम्' नाटक प्रायः ऐतिहासिक कथावस्तु व संदर्भों पर आधारित नाट्यकृति है।

पाद टिप्पणियां

1. प्रतापविजयम्, याज्ञिक, मूलशंकर माणिकलाल, दी बड़ौदा प्रिंटिंग प्रेस, प्रथम संस्करण, 1931, प्रस्तावना, पृ–4
2. वही, मुखपृष्ठ, प्रथम संस्करण
3. वही, प्रस्तावना, पृ°–2
4. वही, प्रस्तावना, पृ°–4
5. वही, प्रस्तावना, पृ°–5
6. वही, पृ°–3
7. वही, पृ°–2–5
8. वही, पृ°–1
9. वही, पृ°–9
10. वही, श्लोक संख्या–10, पृ°–10
11. वही, पृ°–11
12. वही, पृ°–16
13. वही, पृ°–19
14. Annals and antiquities of Rajasthan, Tod, James, Munshiram Publishers, New Delhi, 2001, 83-84p.
15. प्रतापविजयम्, प्रथम संस्करण, द्वितीय अंक, पृ°–33–34
16. वही, पृ°–28
17. वही, पृ°–29–36
18. महाराणा प्रताप, राणा, डॉ° भवान सिंह, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1988, पृ°–68–71
19. प्रतापविजयम्, प्रथम संस्करण, द्वितीय अंक, पृ°–29–30
20. वही, पृ°–30–31
21. राजस्थान का इतिहास, शर्मा, गोपीनाथ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1971, पृ°–290
22. प्रतापविजयम्, प्रथम संस्करण, तृतीय अंक, पृ°–41–46
23. वही, चतुर्थ अंक, पृ°–54
24. Mewar, Mugal Emperors. (1526-1707 A.D.), Sharma, Gopinath, S.L. Aggarwal & Co., Agra, 1954, 86-96.
25. प्रतापविजयम्, प्रथम संस्करण, चतुर्थ अंक, पृ°–56–57
26. राजस्थान का पुरातत्त्व एवं इतिहास, कर्नल टॉड, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015, पृ°–359
27. प्रतापविजयम्, प्रथम संस्करण, षष्ठ अंक, पृ°–79–80, श्लोक संख्या–8
28. वही सप्तम अंक, पृ°–84–85, श्लोक संख्या–4
29. वही, सप्तम अंक, श्लोक संख्या– 5–6
30. राजस्थान का इतिहास, शर्मा, गोपीनाथ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1971, पृ°– 290–292

संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रतापविजयम्(हिन्दी टीका सहित) , याज्ञिक, मूलशंकर माणिकलाल, संपादक, शास्त्री, प्रभात, देवभाषा प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद, 1982
2. मूलशंकर नाटकत्रयी, संपादक, नाणावटी राजेंद्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2010
3. आधुनिक संस्कृत(दो भाग) नाटक–, उपाध्याय, डॉ° रामजी, संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर, 1977
4. महाराणा प्रताप, राणा, डॉ° भवान सिंह, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1988
5. Maharana Pratap. The Invincible Warrior, Hoonja, Rima, Juggernaut Publishers, New Delhi, 2018.